होशियार आर्टी



होशियार आर्टी

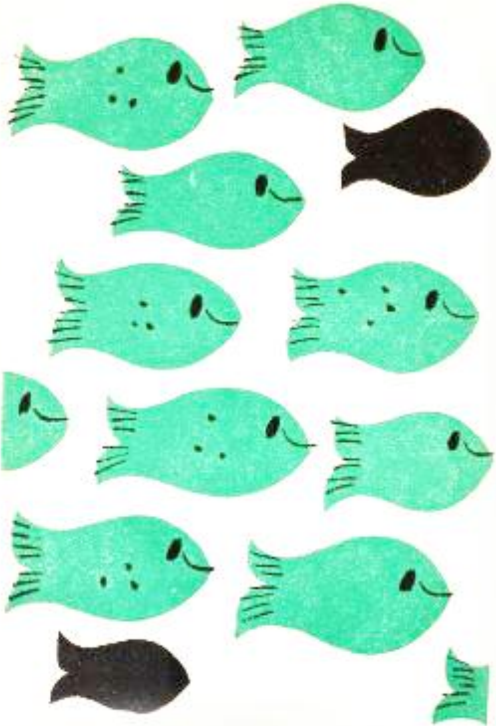




यह कहानी एक छोटी मछली की है.

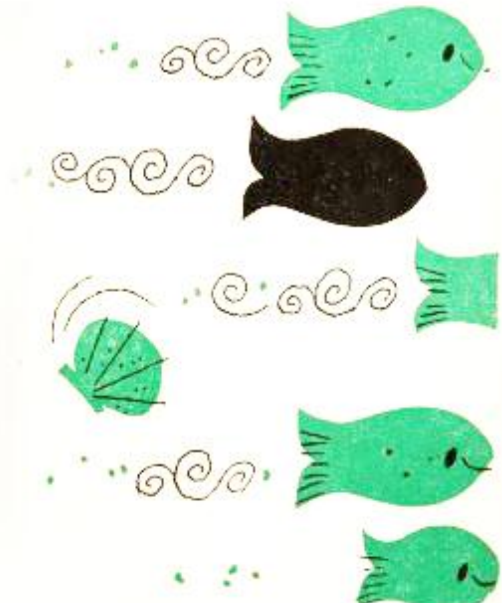
उसका नाम था आर्टी.

वो बहुत होशियार थी.

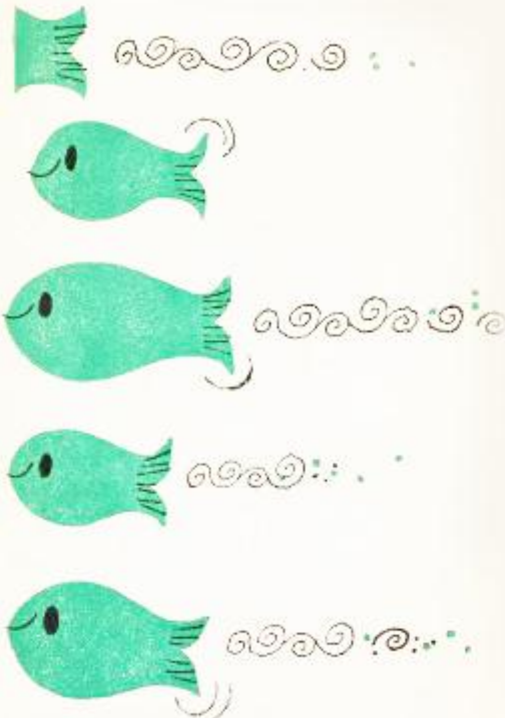


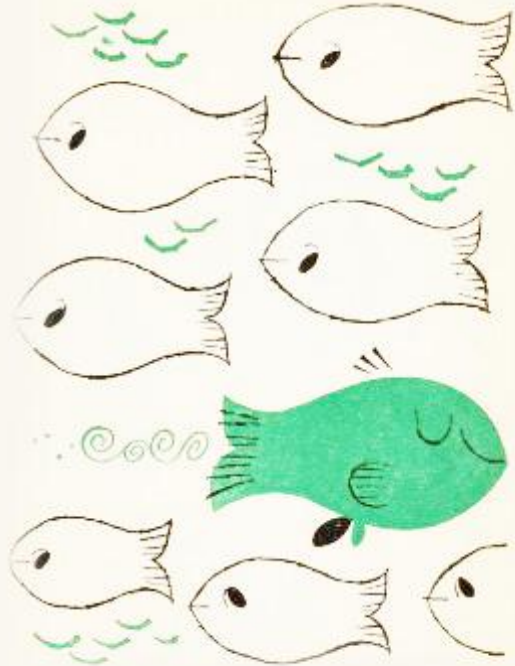
एक दिन सारी छोटी मछलियाँ
एक-दूसरे के पास-पास तैर रही थीं.

सभी छोटी मछलियां एक समय पर
एक ही तरीके से तैरना चाहती थीं.
इसलिए वे सभी एक ही दिशा में तैरीं.

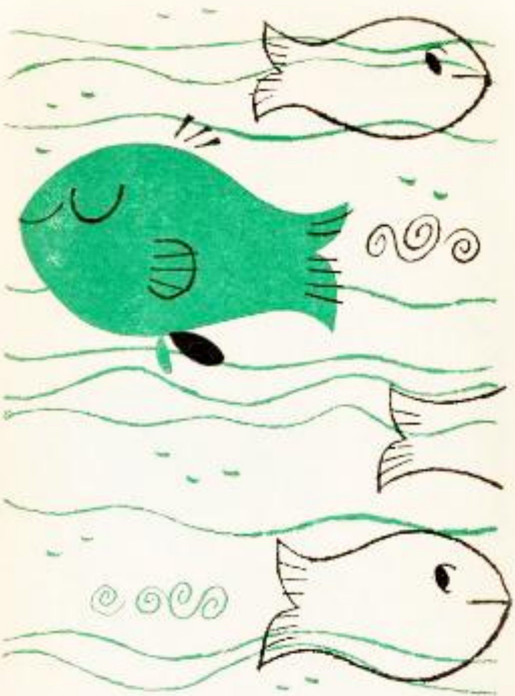


फिर वे दूसरी दिशा में तैरीं.





पर होशियार आर्टी ने क्या किया?
जब बाकी मछलियाँ एक दिशा में तैरी
तब आर्टी दूसरी दिशा में तैरी.

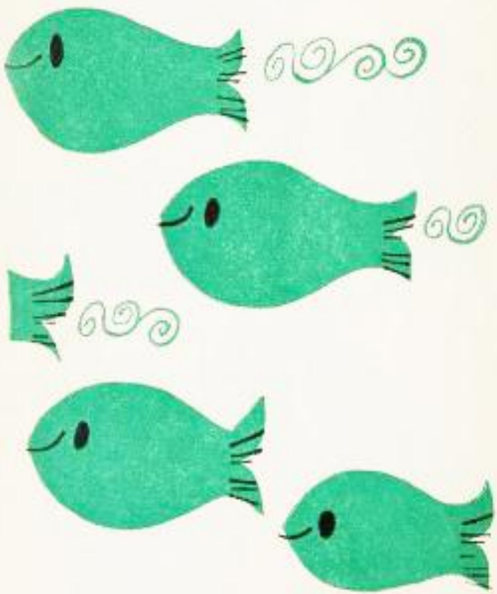


जब बाकी मछलियाँ दूसरी दिशा में तैरीं
तब आर्टी उनसे उलटी दिशा में तैरी.

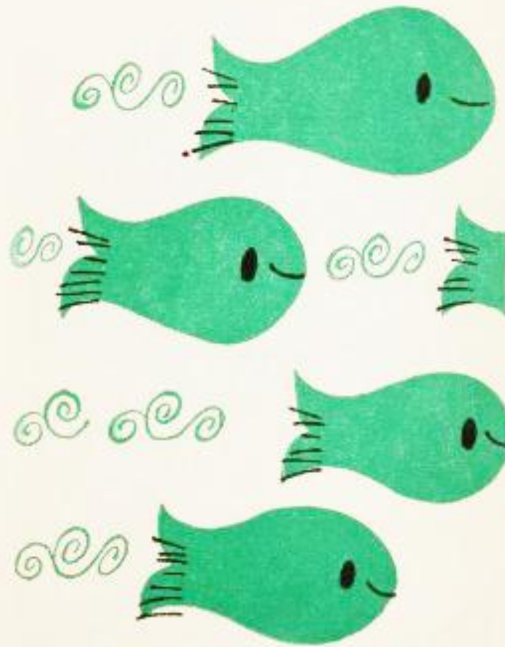
जल्द ही सभी मछलियाँ
आपस में मिल गईं.

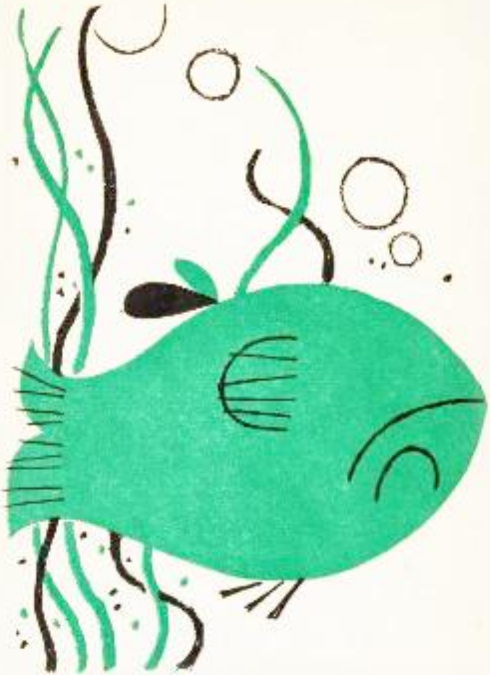


उसके बाद मछलियां
दुबारा एक दिशा में तैरने लगीं.



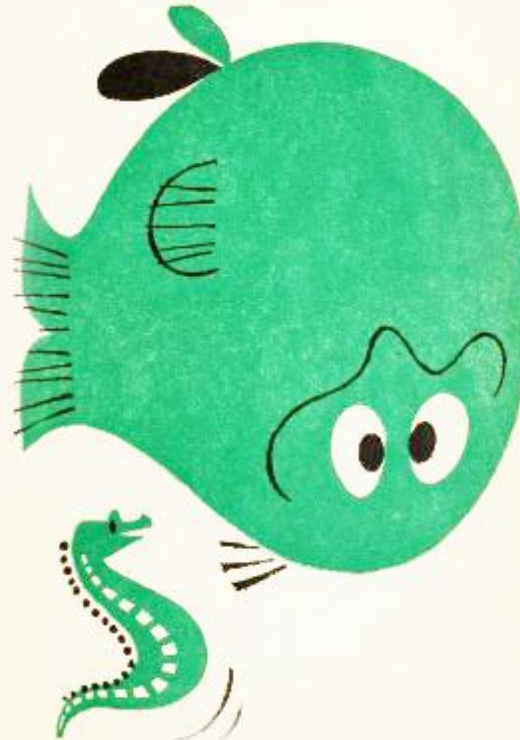
फिर उलटी दिशा में.





फिर होशियार आर्टी दुबारा आई.
उसने क्या किया?
इस बार वो उल्टी होकर तैरने लगी.

होशियार आर्टी के चेहरे पर
एक मज़ेदार मुस्कान थी.



आर्टी का चेहरा देखकर
बाकी मछलियाँ हंसने लगीं,
बुलू - बुलू - बुलू –
हँसते समय उनके मुंह से हवा
के बुलबुले छूटने लगे.





सारी मछलियाँ दुबारा
आपस में मिल गईं!



एक दिन आर्टी को एक
छोटी मछली रोते हुए दिखाई दी.



एक मतलबी बूढ़ा केकड़ा
मछलियों को रुलाता था.
छोटी मछलियों को उस मतलबी
बूढ़े केकड़े से डर लगता था.

पर आर्टी केकड़े से नहीं डरती थी!





आर्टी, निडर होकर
केकड़े के पास तैरती हुई गई.
मतलबी बूढ़ा केकड़ा उस समय
खाना खा रहा था.

पर बूढ़ा केकड़े को बहुत भूख लगी थी.
इसलिए उसने अपना भोजन छोड़ा नहीं.



आर्टी ने केकड़े का भोजन पकड़कर
अपनी तरफ खींचा.

आर्टी ने पूरा दम लगाकर खींचा.
उसने केकड़े को भी गोल-गोल
चक्कर में घुमाया.



इससे बूढ़े केकड़े का
सिर चक्कर खाने लगा.
उसे अपना खाना छोड़ना पड़ा.
चक्कर के कारण वो देर तक
गोल-गोल घूमता रहा.
फिर वहां से बहुत दूर चला गया.





“आर्टी बहुत होशियार और बहादुर है!” छोटी मछलियाँ मिलकर चिल्लाईं. “देखो, उसने उस मतलबी बूढ़े केकड़े को भगा दिया!”

एक दिन आर्टी को एक हुक दिखा. वो एक डोर से लटका था.





पानी एक ऊपर एक मछुआरा
उस डोर पकड़े था.



वाह! उस हुक से खाने की
एक स्वादिष्ट चीज़ लटकी थी.
आर्टी, तैरकर वहां गई.

“नहीं! नहीं!” छोटी मछलियाँ चिल्लाईं.
“आर्टी, उस हुक के पास
बिल्कुल मत जाना!”

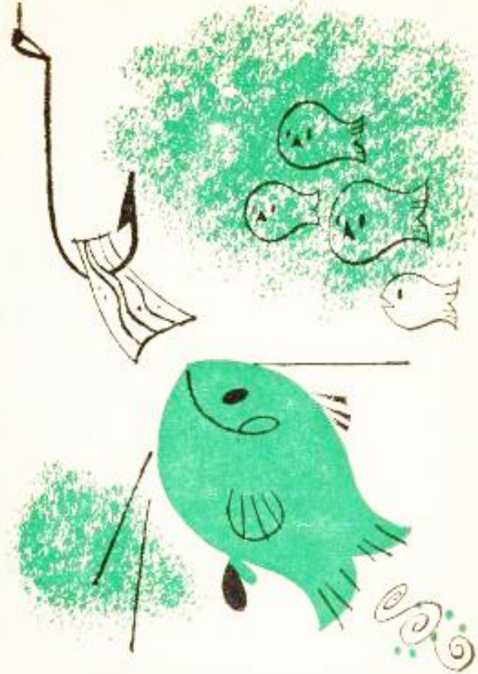




पर आर्टी बहुत होशियार थी.
उसे बिना फंसे, हुक से खाना
निकालना आता था.
उसने वही किया.

फिर आर्टी ने मछुआरे के लिए
हुक में कुछ फंसाकर भेजा.





कुछ देर में हुक दुबारा फिर नीचे आया.
इस बार उसमें और बढ़िया खाना फंसा था.
आर्टी, उसे भी निकालकर खाने के लिए गई.

“नहीं आर्टी! नहीं!”

छोटी मछलियाँ चिल्लाईं.

“उस हुक के पास भूलकर मत जाना!”



पर क्या करना है वो आर्टी को पता था!

उसने हुक से दुबारा खाना निकाल लिया.



हुक दुबारा फिर ऊपर गया.
उसे देख आश्चर्य से सारी
छोटी मछलियाँ हंसने लगीं.





आर्टी ने मछुआरे के लिए फिर से
हुक पर कुछ लटकाया.

पर मछुआरा नहीं हंसा!
वो वहां से चला गया!





“आर्टी, वाकई में बड़ी होशियार है!”
छोटी मछलियाँ मिलकर चिल्लाईं.
“उसने मछुआरे को ही भगा दिया!
आर्टी, कुछ भी कर सकती है!”

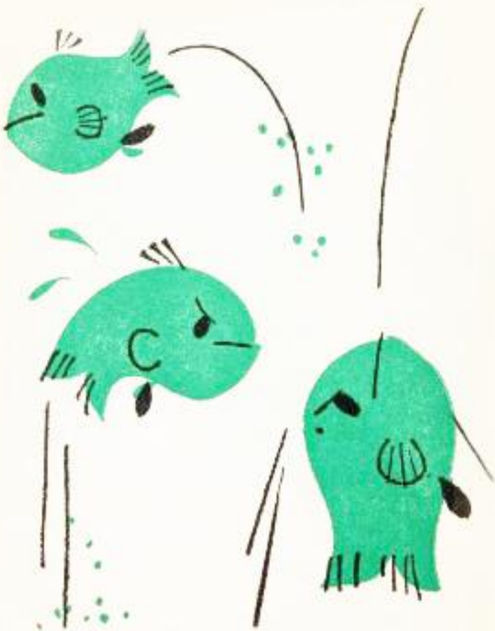


पर कुछ ऐसा भी था जो आर्टी
नहीं कर सकती थी.
आर्टी, की बड़ी इच्छा थी कि वो
पानी में एक बड़ा छपाका बनाए.



पर क्योंकि वो एक छोटी मछली थी
इसलिए वो एक छोटा छपाका ही
बना सकती थी.

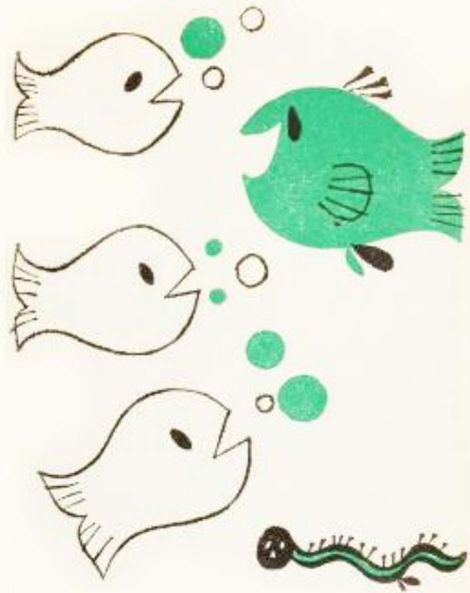
पर आर्टी ने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी.
वो लगातार कूदती रही.
वो लगातार बड़ा छपाका बनाने का
प्रयास करती रही.
एक बहुत बड़ा छपाका!





वो कूदती रही, कूदती रही.
पर वो केवल छोटे छपाके
ही बना पाई.



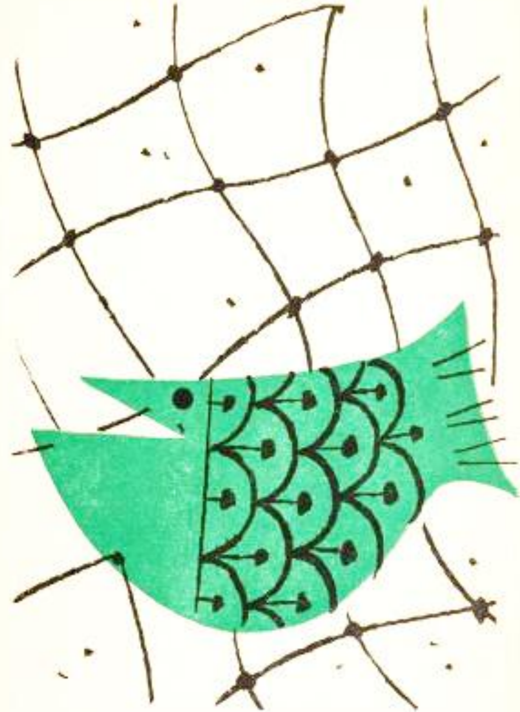


एक दिन आर्टी ने कहा,
“मुझे बड़ा छपाका बनाने के लिए
एक बड़ी जगह पर जाना होगा.
उसके लिए मैं तैरकर समुद्र में जाऊंगी.”

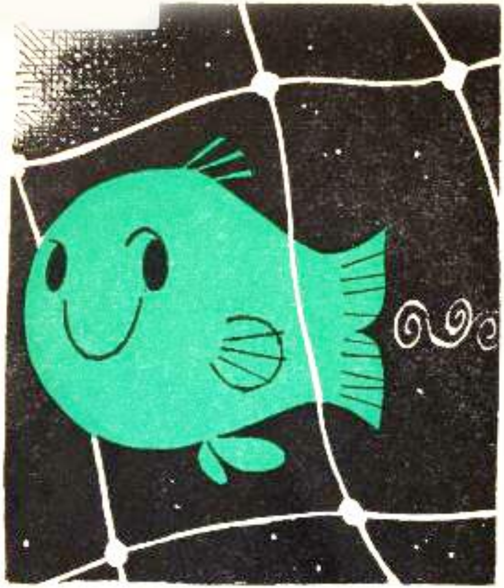
“तुम भूलकर भी समुद्र में मत जाना.
वहां जाने के बाद तुम फिर कभी
वापिस नहीं आओगी!”
छोटी मछलियों ने कहा.

पर आर्टी तैरती हुई समुद्र में गई. समुद्र में कई मछली पकड़ने वाली नावें थीं.





समुद्र में मछलियों को पकड़ने के लिए जाल बिछे थे.



"मैं जाल में नहीं फसूंगी!" आर्टी ने कहा.
वो एक छोटी मछली थी.
वो जाल में से अन्दर-बाहर आ-जा सकती थी.
फिर वो तैरते-तैरते समुद्र के
सबसे गहरे भाग में पहुंची.

आर्टी को यह नहीं पता था
कि समुद्र के सबसे गहरे भाग में व्हेल
मछलियाँ रहती थीं.
तभी आर्टी के पास से एक व्हेल गुज़री.
वो एकदम भीमकाय - विशाल थी.
उसका मुंह खलिहान के दरवाज़े जितना
ऊंचा था.
उसका मुंह इतना चौड़ा था
कि आर्टी को व्हेल दिखी तक नहीं.



व्हेल भी बढ़ी
आर्टी भी बढ़ी.
फिर आर्टी, सीधे व्हेल के मुहं के अन्दर घुसी.
अन्दर घुप्प, गहरा अँधेरा था.
आर्टी, को वहां अच्छा नहीं लगा.
“मैं कहाँ हूँ?” उसने कहा.
“यह सब क्या है?
यह क्या हो रहा है?”





आर्टी गोल-गोल तैरने लगी.
वो इधर-उधर, बाएं-दाएं तैरने लगी.



तभी आर्टी, व्हेल से जाकर टकराई.

धड़ाम! टक्कर!

आर्टी कूदने लगी और छपाके बनाने लगी.

बलू- बलू- बलू-

वो हवा के बुलबुले छोड़ने लगी.



धड़ाम! टक्कर!

छपाके! छपाके!

बलू- बलू- बलू-

व्हेल को कुछ समझ में नहीं आया

कि उसके अन्दर यह क्या हो रहा था.

इस सबसे उसे बहुत गुदगुदी हो रही थी.



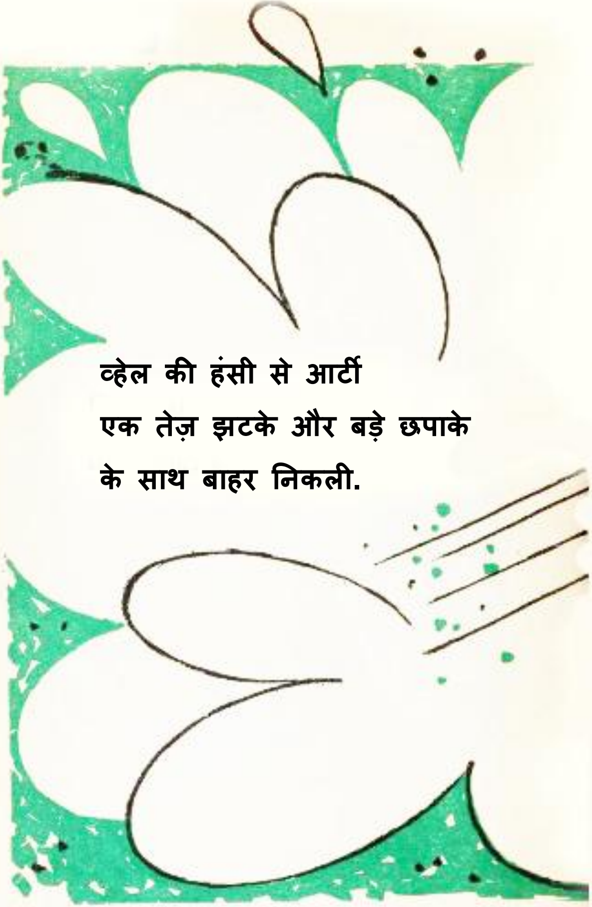


गुदगुदी की वज़ह से व्हेल को

ज़ोर के हंसी आई.

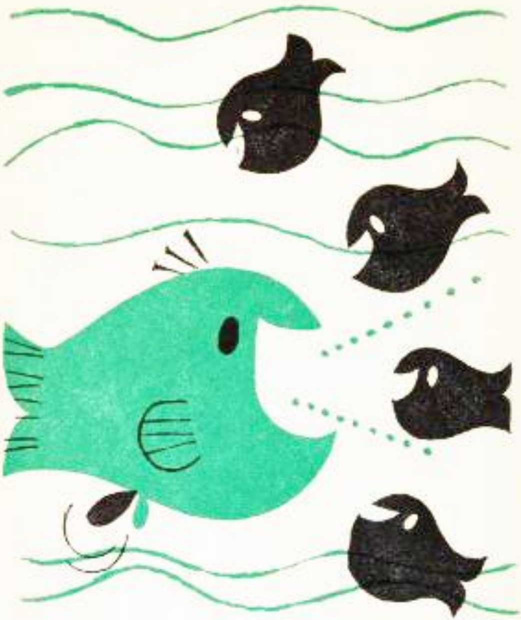
क्या हंसी थी वो!

“मैं कर पाई! मैं कर पाई!”
आर्टी चिल्लाई.
“मैंने व्हेल जितना बड़ा छपाका बनाया!”



व्हेल की हंसी से आर्टी
एक तेज़ झटके और बड़े छपाके
के साथ बाहर निकली.





उसके बाद आर्टी
तेज़ी से घर वापिस लौटी.
वो छोटी मछलियों को उस छपाके के बारे में
सबकुछ बताना चाहती थी.